E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

डॉ. हंसादीप के उपन्यास साहित्य में प्रवासगत दृष्टि का समीक्षात्मक अध्ययनः कनाडा प्रवास के विषेष संदर्भ में''

रविन्द्र कुमार गढ़वाल
शोधार्थी (पीएच.डी.)
डॉ. वंदना चराटे
प्राध्यापक हिन्दी
भेरूलाल पाटीदार शासकीय महाविद्यालय
महु (म.प्र.)

Paper Received date
05/07/2026
Publishing Date
10/07/2026
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.22009434

IMPACT FACTOR 5.924

सारांश

डॉ. हंसादीप के उपन्यास साहित्य में 'प्रवासगत दृष्टि' मुख्य रूप से ऐसी नज़र से उभरती है, जो विदेष में रहकर भारतीय समाज, संस्कृति और व्यक्तिगत सम्बन्धों को नए कोण से देखती है। इन उपन्यासों में प्रवासी चरित्र अक्सर दो जगहों–मातृभूमि और प्रवास स्थल के मध्य तनाव और अंतर्द्वन्द्व के साथ जुड़े हुए हैं। जहाँ भौतिक सुविधा और विकसित आधुनिक वातावरण के बावजूद भावनात्मक अकेलापन, पहचान की सोच तथा परम्परा आधुनिकता के बीच टकराव साफ झलकते हैं।

कनाडा प्रवास के विषेष संदर्भ में हंसादीप के उपन्यासों में प्रवासी व्यक्ति अपने भीतर दो जगहों और दो संस्कारों के मेल व टकराव को अनुभव करते हैं इसलिये उनकी दृष्टि विष्लेषणात्मक, आत्ममंथन से भरी और यथार्थवादी हो जीत है। लेखिका मनोवैज्ञानिक गहराई से प्रवासी चरित्रों की एकाकी भावनाओं, भूमिकोतरण और विघटनकारी नैतिक मूल्यों को दर्षाती है, जिससे प्रवासी दृष्टि केवल भौगोलिक गतिषीलता तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि आंतरिक प्रवास की बात भी बन जाती है।

डॉ. हंसादीप के उपन्यासों में प्रवासगत दृष्टि विदेष में रहने वाले भारतीयों की आंतरिक व बाह्य अनुभवों का संतुलन है। उनके उपन्यास बंद–मुट्ठी, कुबेर, कांच के घर और केसरिया बालम में प्रवास को केवल शहर या देष बदलने का नहीं बल्कि संस्कृति, सम्बन्ध और भूमिकाओं में परिवर्तन का विषय बताया है। प्रवासियों की भावनाएँ, उनकी स्मृतियों, नए वातावरण में अनुमूलन को कौषिष और पुरानी परम्परा से दूरी कनाडा प्रवासगत अनुभवों से प्रेरित हो उकेरा गया है। उनकी प्रवासगत दृष्टि आलोचनात्मक, विवेकपूर्ण, यथार्थपूर्ण और मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रेत है।

परिचय

साहित्य में 'प्रवासगत दृष्टि' से अभिप्राय विदेषी भूमि पर प्रवासियों के सांस्कृतिक, भावनात्मक और पहचान सम्बन्धी द्वन्द्वों का यथार्थवादी चित्रण है, जो देष की स्मृतियों, नयी संस्कृति के टकराव, अकेलेपन और जिजीविषा का केन्द्र में रखता है। यह दृष्टि हिन्दी साहित्य को वैष्विक बनाती है, जहाँ भारतीय चेतना बहुसांस्कृतिक परिवेष में पुनर्परिभाषितक होती है। तृतीय अंतरराष्ट्रीय भारतीय भाषा सम्मेलन 2026 की रिपोर्ट (पुरातन साहित्य की दशा व दिशा) में अनेक विद्वानों, भाषाविदों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। इस सत्र के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी की सोच में – ''प्रवासी साहित्य

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सिर्फ 'देश की याद' नहीं, बल्कि वैश्विक अनुभव, नई संवेदनाएँ एवं बहुसंस्कृतियों का संवाद प्रस्तुत करता है। प्रवासी साहित्य भारतीय भाषा की, संस्कृति और वैज्ञानिक पहचान को विश्व स्तर पर विस्तृत रूप से प्रस्तुत करता है और हिन्दी परिवार को एक आत्मीय वैश्विक समुदाय का सदस्य बनाता है।''

प्रस्तुत शोध–पत्र में डॉ. हंसादीप के उपन्यास साहित्य में प्रवासगत दृष्टि का समीक्षात्मक अध्ययन विशेष तौर पर कनाडा प्रवास के संदर्भ में किया गया है। साहित्य में 'प्रवासगत' को यदि अर्थापित या परिभाषित किया जाये तो यह कह सकते हैं कि विदेषी भूमि पर प्रवासियों के अनुभवों से उत्पन्न सांस्कृतिक, भावनात्मक और सामाजिक द्वन्द्वों का यथार्थवादी चित्रण प्रवासगत दृष्टि है। यह दृष्टि देश की स्मृतियों, नई संस्कृति के टकराव, पहचान संकट और जिजीविषा को व्याख्यायित करती है।

डॉ. हंसादीप के उपन्यास साहित्य में 'प्रवासगत दृष्टि' का तात्पर्य भारतीय प्रवासियों के बहुदेशीय जीवन (कनाडा, अमेरिका, सिंगापुर आदि) से उत्पन्न सांस्कृतिक, भावनात्क और सामाजिक द्वन्द्वों का यथार्थवादी चित्रण से है, जहाँ अपनी मिट्टी से बिछुड़ने का दर्द और नई भूमि पर भारतीय चेतना गढ़ने का संकल्प एक साथ उभरता है। यह दृष्टि जिजीविषा, मानवीय संवेदनाओं, नारी मनोव्यथा, पीढ़ीगत टकराव और व्यंग्यात्मक यथार्थवाद पर आधारित है।

प्रस्तुत शोध पत्र में प्रवासी साहित्य की विशेषताओं के संदर्भ में डॉ. हंसादीप के उपन्यास साहित्य का आकलन कर विशेषतौर पर केनेडा प्रवास का प्रभाव उनके उपन्यासों पर शोधपरक दृष्टिकोण से विश्लेषित किया जा रहा है।

बीज शब्द :– प्रवासगत दृष्टि, तनाव,,अंतर्द्वन्द्व, बहुदेशीय, बहुसांस्कृतिक परिवेश

पूर्व शोध :–

डॉ. हंसादीप के कथा–साहित्य में वर्तमान में काफी शोध और आलोचनात्मक अध्ययन हुए हैं, जो उन्हें समकालीन महिला कथाकारों के बीच एक महत्वपूर्ण अध्ययन हुए हैं, जो उन्हें समकालीन महिला कथाकारों के बीच एक महत्वपूर्ण साहित्यकार के रूप में स्थापित करते हैं। उनके कथा साहित्य पर अब तक विषेष रूप से दो प्रकार के शोध संकलन उल्लेखनीय हैं :–

i) ''प्रवासी साहित्यकार हंसादीप का उपन्यास साहित्य'' (संपादक : डॉ. दीपक पाण्डेय व डॉ. नूतन पांडेय) इस पुस्तक में उनके चार उपन्यासों पर कुल 15 शोध पत्र/आलेख समाहित है। इसमें उनके उपन्यासों की संरचना, विषयवस्तु, प्रवासी पृष्ठभूमि, सामाजिक विडम्बना, मानवीय संवेदना और भाषा शैली पर अलग–अलग आलेखकों ने विभिन्न दृष्टिकोण से विचार किया है।''

ii) ''विविध आलेख–संग्रह व आलोचना लेख :– कई हिन्दी पत्रिकाओं और वेब पत्रिकाओं में उनकी कहानियों, उपन्यासों पर आलोचनात्मक लेख प्रकाषित हुए हैं, जिनमें उनकी सामाजिक चेतना, पारिवारिक यथार्थ नारी संवेदना, प्रवासित और बाल अनुभव को विषेष रूप से उठाया गया है।''

- **उद्देष्य :–** प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उद्देष्य निर्धारित किये गये थेः–

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

i) डॉ. हंसादीप का साहित्यिक परिचय प्रदान करना।

ii) प्रवासगत दृष्टि का परिचय व विषेषता वर्णित करना।

iii) डॉ. हंसादीप के उपन्यास साहित्य में प्रवासगत दृष्टि की समीक्षा करना।

(कनाडा प्रवास के विषेष संदर्भ में)

vi) प्रवासगत दृष्टि की विषेषताओं के आधार पर डॉ. हंसादीप के उपन्यास साहित्य का मूल्यांकन करना।

- परिकल्पना :– डॉ. हंसादीप के उपन्यासों में कनाडा प्रवास आधारित प्रवासगत दृष्टि समान रूप से नहीं पायी जायेगी।
- शोध परिधि :– प्रस्तुत शोध हेतु वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।
- सीमांकन :– प्रस्तुत शोध हेतु डॉ. हंसादीप के ही उपन्यासों का आकलन मूल्यांकन किया गया है।

i) प्रथम उद्देष्य की पूर्ति :–

- डॉ. हंसादीप का साहित्यिक परिचय :– डॉ. हंसादीप का जन्म मेघनगर (जिला झाबुआ), मध्यप्रदेष में हुआ था, जहाँ के ग्रामीण भारतीय संस्कार, भारतीय पारिवारिक संरचना और लोक–संस्कृति की जड़ें उनके व्यक्तित्व में गहराई तक पैठी हुई है। उन्होंने बरकतुउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल तथा विक्रम विष्वविद्यालय उज्जैन में षिक्षण अनुभव प्राप्त किया, तत्पष्चात न्यूयार्क और अंततः टोरंटो में निवास करते हुए हिन्दी अध्यापन और लेखन को जीवन का मंत्र बनाया। उनके द्वारा सृजित प्रमुख उपन्यास हैं – 'बंद मुट्ठी', 'कुबेर', 'केसरिया बालम' और 'कांच के घर' जो उपन्यास साहित्य में उनकी विषिष्ट पहचान निर्मित करते हैं। उनके लगभग सात कहानी संग्रह और दर्जनों लघुकथाएँ, आलेख, अनुवाद आदि हिन्दी साहित्य में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

  डॉ. हंसादीप को कई सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं, इनमें उल्लेखनीय – पुरवाई कथा सम्मान–2022, जयपुर साहित्य सम्मान, 2022, महिला शक्ति सम्मान 2022, गया प्रवाद खरे स्मृति साहित्य, कला एवं खेल संवर्द्धन मंच द्वारा 'षांति' गया स्मृति प्रवासी साहित्य रत्न सम्मान, 2021, कमलेष्वर स्मृति कथा पुरस्कार, 2020, कथा रंग सर्जना पुरस्कार (प्रतियोगिता) 2023 आदि है।

  डॉ. हंसादीप के कथा साहित्य में प्रवासी जीवन की चुनौतियाँ, पारिवारिक टूटन और सांस्कृतिक असमंजस की झलक निरंतर दिखायी देती है।

ii) द्वितीय उद्देष्य की पूर्ति :– 'प्रवासगत दृष्टि' शब्द का अर्थ यहाँ 'प्रवासी' जीवन की दृष्टि से उत्पन्न दृष्टिकोण है, जिसमें लेखन अपने मूल देष की स्मृति और नए देष की वास्तविकता के मध्य एक संवेदी दृष्टांत सेतु बनाता है। इस दृष्टि से 'प्रवासगत दृष्टि' वास्तव में स्मृति और वर्तमान का संघर्ष, संस्कार और

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बाजारवाद/एलोबलाइजेश) भूमंडलीकरण की टक्कर, पारिवारिक बंधन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की जंजीर खोलने का तनाव से जुड़ा है।

''प्रवासगत दृष्टि नास्टेलिजया से आगे बढ़कर सांस्कृतिक आधात, पीढ़ीगत संघर्ष, नस्लवाद और भाषाई विविधता पर केन्द्रित है। यह दृष्टि हिन्दी को नई भाषा–धाराएँ प्रदान करती है, विष्व साहित्य से संवाद स्थापित करती है तथा प्रवासी अनुभवों को शोध का विषय बनाती है।'' प्रवास केवल स्थान परिवर्तन नहीं है, यह पहचान स्मृति, विस्थापन, संस्कृति, भाषा और अस्तित्व से जुड़ी गहरी मानवीय अनुभूति है। जब साहित्य में प्रवासी जीवन चित्रित होता है, तो उसके इर्द–गिर्द एक विषिष्ट चेतना, विषिष्ट दृष्टि भी विकसित होती है। इसका संक्षिप्त उललेख निम्नांकित हैं :–

- विस्थापन :– घर–जमीन–मूल परिवेष से अलग होने का दर्द, यह चेतना व्यक्ति को लगतार 'कहीं का नहीं' होने की स्थिति में रखती है।
- स्मृति :– प्रवासी पात्र अतीत की यादों में जीता है। गांव, घर, भाषा, रिष्ते, सब स्मृति के प्रतीक बन जाते हैं।
- पहचान :– ''मैं कौन हूँ?'' यह प्रष्न प्रवासगत दृष्टि को केन्द्र बिन्दु है। नयी संस्कृति में स्वयं को बचाए रखना एक संघर्ष है।
- सांस्कृतिक द्वन्द्व :– पुरानी और नयी संस्कृति के बीच टकराव/परम्परा बनराम आधुनिकता, यह प्रवासगत दृष्टि की जंग है।
- भाषिक चेतना :– पुवासी साहित्य में भाषा मिश्रित हो जाती है। मातृभाषा + नई भाषा = पहचान का नया रूप, प्रवासगत दृष्टि को एक संघर्ष है।
- असितत्व चेतना :– जीविका, सम्मान, सामाजिक, स्वीकार्यता के लिये संघर्ष, वह चेतना प्रवासगत दृष्टि के आंतरिक यथार्थ से जुड़ी होती है।

iii) तृतीय उद्देष्य की पूर्ति :– डॉ. हंसादीप का हिन्दी उपन्यास साहित्य आज समकालीन हिन्दी साहित्य में एक विषिष्ट स्थान रखता है, जहाँ भारतीय भावभूमि विदेषी पृष्ठभूमि एक साथ जीवंत रूप से संवाद करती है। वे वर्तमान में यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो (कनाडा) में हिन्दी व्याख्याता के पद पर कार्यरत है और उनकी साहित्यिक यात्रा भारत से उठकर कैनेडियन आकाषीय धरती पर आकर थमी है। इसी प्रवासी अनुभव के उनके उपन्यासों को एक 'प्रवासगत दृष्टि' से भर दिया है, जिसमें देष–विदेष, भावना–वास्तविकता, पारिवारिक मूल्य और अस्तित्व की खोज एक–दूसरे से गहराई से जुड़ी है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रस्तुत शोध–पत्र में डॉ. हंसादीप के उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है, जो कनाडा प्रवास के सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों के विषेष संदर्भ में उनकी उपन्यास सवर्था को देखता है। यह शोध निम्न प्रष्नों का विषेष रूप से उत्तरों का आकलन करता है :–

- कनाडा में निवास करते हुए लेखन की विषयवस्तु और भावनाओं का रूप कैसे परिवर्तित हुआ ?
- प्रवासी जीवन का अनुभव उपन्यासों की संरचना, पात्र निर्माण और भाषा शैली पर किस प्रकार छापा?
- भारतीय संस्कार और कैनेडियन संस्कृति वास्तविकता के बीच संघर्ष और समन्वय की रूपरेखा कहाँ–कहाँ दिखाई देती है ?

कनाडा प्रवास के बाद डॉ. हंसादीप के उपन्यासो में भारत–कनाडा, ग्राम–नगर, परम्परा आधुनिकता जैसी द्वन्द्वात्मकता बार–बार व्यक्त होती है।

''कुबेर'' उपन्यास में ग्रामीण भारत के एक साधारण बालक की यात्रा न्यूयार्क तक जाती है, जहाँ वह आर्थिक सफलता के बावजूद भी अपनी भावनाओं और संस्कारों से दूर–दूर तक टूटता हुआ दिखता है। इस उपन्यास को आलेख व 'एक दुखांत से सुखांत' की यात्रा के रूप में व्याख्या करते हैं, जिसमें व्यक्ति बाहर से सफल होता है, पर भीतर खाली हो जाता है। वैसे हंसादीप के चारों उपन्यासों में प्रवास की थीम प्रमुखता से उभरती है। 'कुबेर' उपन्यास एक गरीब गरीब बालक 'धन्नु' की कथा कहता है, जो भारत के आंचलिक जीवन से न्यूयार्थ और लास बेगास जैसे वैष्विक केन्द्रों तक पहुँचता है, जहाँ मेहनत और आत्मबल से वह कंगाल से कुबेर बन जाता है।

हंसा दीप के 'बंद मुट्ठी' उपन्यास में प्रवासगत दृष्टि सिंगापुर और कनाडा जैसे स्थानों पर केन्द्रित है, जहाँ भूमण्डलीकरण के दौर में भारतीय परिवारों के रिष्ते नये समीकरण रचते हैं। यह उपन्यास गोद ली गई विरिया, रिया, तान्या उसके गोरे पति सैम और माता–पिता, तान्या, तनेजा के पारिवारिक द्वन्द्व को चित्रित करता है, जिसमें खून के रिष्तों के बजाय दिल के बंधनों की प्रबलता दिखाई गई है। उपन्यास दिया की रखी वर्षगांठ से प्रारम्भ होता है, जहाँ सिंगापुर में बसे पंजाबी परिवार का कनाडा प्रवास होता है। पिता का अहं और क्रोध अपनापन छीन लेता है, जबकि बेगोन अनुपस्थिति में भी उसकी धड़कन महसूस होती है।

इस उपन्यास में प्रवास यहाँ भौगोलिक नहीं, बल्कि भावनात्मक यात्रा है – परम्परागत मूलय बनाम आधुनिक प्रेम दर्षाया गया है। जस्सी, बीनू, शुचि जैसे छात्र प्रेम को त्यागने या स्वीकारने के द्वन्द्व में उलझते हैं, जो बदलते समय की जिजीविषा को दर्षाता है। व्यंग्यपूर्ण यथार्थवाद से अपनों के बेगानेपन को उजागर करती है।

डॉ. हंसादीप के 'कांच के घर' उपन्यास में प्रवासगत दृष्टि मुख्य रूप से कनाडा के टोरंटो पर केन्द्रित है, जहां साहित्यिक जगत की संगतियों–विसंगतियों को हास्य–व्यंग्य के माध्यम से चित्रित किया गया है। यह उपन्यास कोरोनाकाल परिवेष में भारतीय प्रवासियों के सामाजिक–आर्थिक संघर्षों, प्रतिद्वन्द्विता और सांस्कृतिक जड़ों की जीवंतता बनाता है। इस उपन्यास में प्रवास विदेषी धरती पर भारतीय चेतना की प्रस्तुति है। नौकरी, पेंषन, पारिवारिक टकराव

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

और साहित्यिक महत्वाकांक्षाओं के बीच द्वन्द्व, कुटिल योजना और स्वार्थपरकता है। लेखिका यथार्थवादी शैली से धक्क खाते प्रवासियों का मार्मिक चित्रण करती है, जिसमे भारत की सामाजिक हलचलें टोरंटो की मिट्टी में भी पनपती और धड़कती है।

हंसा जी 'केसरिया बालम' उपन्यास में भी प्रवासगत दृष्टि राजस्थान से अमेरिका तक फैली धाती और बाली के प्रेम संघर्ष पर केन्द्रित है।। ''कहानी राजस्थानी माता–पिता की बेटी धानी के विवाह से शुरू होती है, जो प्रेमी बाली के साथ अमेरिका (न्यू जर्सी) प्रवास करती है। परिवार टूटता है, कोरोकालीन चुनौतियाँ आती हैं, किन्तु प्रेम की गहराई सब कुछ समेट लेती है, नदी–समुद्र की उपमा से पुनर्जनम का भाव उभरता है।''

प्रवास इस उपन्यास में भावनात्मक यात्रा है, विदेषी भूमि पर भारतीय उमंगें, नारी चेतना, बिछोह–मिलन के द्वन्द्व और जीवन की सच्चाईयों का यथार्थवादी चित्रण। लेखिका सलोनी, कजरी जैसे पारत्रों ने नारी मन की बेबाकी चित्रित करती है, जो देषों के बीच प्रेम की अनंतता रचती है।

- कनाडा प्रवासी हिन्दी साहित्य में हंसादीप का स्थान :– कनाडा प्रवासी हिन्दी साहित्य में डॉ. हंसादीप का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण व विषिष्ट है। वे कनाडा की हिन्दी लेखन परम्परा के एक प्रमुख स्तम्भ के रूप में मानी जाती है। उनके साहित्यिक प्रवासगत दृष्टि में कनाडा प्रवास के स्थान को निम्नांकित आधारों पर समीक्षित किया जा सकता है :–

i) प्रवासी हिन्दी के उभरते केन्द्र में भूमिका :– कनाडा में हिन्दी भाषा और साहित्य की एक स्वतंत्र और समृद्ध परम्परा विकसित हो चुकी है, जिसमें टोरंटो, वैकवर, मॉन्ट्रियल आदि नगरों के विष्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यापन और लेखन का विस्तार हुआ है। डॉ. दीपक पाण्डेय जैसे शोधकर्ता कनाडा की हिन्दी पत्रिकाओं जैसे वसुधा संवाद, पुस्तक भारती आदि। और वे पत्रिकाओं को हिन्दी प्रवासी साहित्य का महत्वपूर्ण मंच बनाते हैं, जिससे हंसादीप की सूचनाएँ निरंतर प्रकाषित होती रहती है। इस राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क में डॉ. हंसादीप ने एक प्रवासी लेखिका, षिक्षिका और संपादक के रूप में निरगुणात्मक योगदान दिया है, जिससे कनाडा हिन्दी साहित्य को केवल गहराई, बल्कि संस्थागत आधार भी मिला है।

कनाडा प्रवासी हिन्दी साहित्य में डॉ. हंसादीप का वषिष्ट योगदान है। वे 'प्रवास' की केवल भौगोलिक नहीं विस्थापन नहीं वरन् भावनात्मक और सांस्कृतिक द्वन्द्व के रूप में व्याख्या करती है। उनके उपन्यासों में भारत से आये लोगों की संस्कार स्मृति, कनाडा की उन्नत जीवन शैली, व्यवस्था और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के आकर्षण और इन दोनों के मध्य उत्पन्न असुरक्षा और असमंजस का जटिल चित्रण मिलता है। कनाडा प्रवासी हिन्दी साहित्य में एक नया प्रवासगत दृष्टिकोण दिखाता है, जिससे डॉ. हंसादीप को इस परम्परा का 'प्रवास अनुभव पर आधारित संवेदी आवास' के रूप में जाना जाता है।

- **निष्कर्ष**

डॉ. हंसादीप के उपन्यासों पर कनाडा प्रवास का गहरा प्रभाव पड़ा है, जो उनकी कर्मभूमि टोरंटो होने से उपन्यासों की पृष्ठभूमि को कनाडा–भारत की भावभूमि से जोड़ता है तथा प्रवासी जीवन की विसंगतियों को यथार्थवादी स्वरूप प्रदान

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

करता है। कनाडा में यूनिवर्सिटी ऑफ टोरेंटो में व्यख्याता के पद पर कार्यरत हंसादीप ने 'कांच के घर' उपन्यास में टोरंटो के साहित्यिक पात्र की संगति–विसंगतियों को हास्य–व्यंग्य से उकेरा है। यह अनुभव हिन्दी साहित्य को वैष्विक आयाम देता है, जहाँ कनाडाई हिन्दी परम्परा उनकी रचनाओं को प्रेरित करती है।

उनमें उपन्यासों पर थीमेटिक प्रभाव भी आकलन किया गया है। कनाडा प्रवास ने उपन्यासों में प्रवासी पहचान, पारिवारिक द्वन्द्व और भारतीय संवेदनाओ को कनाडाई वास्तविकताओं से जोड़ा है। जैसे 'बंद मुट्ठी' और 'केसरिया बालम' उपन्यास में टोरंटो–न्यू जर्सी पृष्ठभूमि पर सांस्कृतिक टकराव उभरता है, जो लेखिका के प्रत्यक्ष अनुभवों से प्रेरित है।

कनाडाई प्रवास ने उनके 'प्रवासगत दृष्टि' को उनकी भाषा को आंचलिक प्रवासी मिश्रित बताया है, जो कनाडा की बहुसांस्कृतिकता को प्रतिबिम्बित करता है। यह प्रभाव हिन्दी साहित्य को समृद्ध करता है, प्रवासी लेखन को नई दिषा देता है।

निष्कर्षात्मक तौर पर यह कथित किया जाता है कि डॉ. हंसादीप के उपन्यास साहित्य में प्रवासी पहचान की प्रमुख चुनौतियाँ जैसे सांस्कृतिक द्वन्द्व, पारिवारिक विघटन, अकेलापन और रूढ़िगत परम्पराओं का टकराव मौजूद है, जो बहुदेषी पूष्ठभूमि (सिंगापुर, कनाडा, अमेरिका) में भारतीय मूल्यों को बनाए रखने के संघर्ष को उजागर करता है।

विषेष रूप पर कनाडा प्रवास संदर्भित 'प्रवासगत दृष्टि' हंसादीप के उपन्यासों में सरहदों के पार मन की विचरणता को दर्षाती है। इन उपन्यासों में बनाडा प्रवास का भौगोलिक परिवर्तन भावनात्मक यात्रा बन जाता है। यह प्रगतिवादी मूल्यों, सुखांत, आदर्षोन्मुख यथार्थवाद और आंचलिक भाषा से सृजित सार्वभौमिकता प्रदान करता है।

उनकी प्रवासगत दृष्टि हिन्दी साहित्य को वैष्विक बनाती है, प्रवासी भारतीयों की पहचान को मजबूत करती है तथा भारत की स्पंदित स्मृतियों को विदेषी धरती पर जीवित रखती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पांडे, दीपक एवं पांडे नूतन, प्रवासी भारतीय साहित्यकार, हंसादीप का उपन्यास साहित्य, सर्वभाषा, ट्रस्ट, नई दिल्ली।
2. संधु, मधु, सामाजिक प्रेरणापद उपन्यास कुबे।
3. तिवारी, विजय कुमार, केसरिया बालम : प्रेम का भावपूर्ण मार्मिक चित्रण।